ओपा बिक — मठ

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

ट्रक के गंतव्य तक पहुँचने में बस उतना ही वक़्त लगा, और एउजेनियो ने मुझे उतर जाने को कहा।

उसने पुष्टि की कि तीन दिन बाद ठीक यही जगह होगी जहाँ वह मुझसे दोबारा मिलेगा, घर वापसी की यात्रा के लिए।

मैंने अपना फोन निकाला और वह जगह खोजी जहाँ मुझे रात बितानी थी। दूरी 3.6 किलोमीटर थी।

तो मैं पैदल चल पड़ा, तथ्यों, घटनाओं और परिस्थितियों की उस अजीब कड़ी पर सोचता हुआ जो मुझे यहाँ तक ले आई थी, और अपने साझा ठिकाने तक पहुँचने की प्रतीक्षा में बीच-बीच में मुस्कुराए बिना न रह पाता।

जब आखिरकार मैं पहुँचा, तो इमारत कुछ अजीब-सी लगी। वह चर्च, चक्की और खेती के गोदाम का मिला-जुला रूप थी।

पर मैं फ्रांस में था। जो चीज़ें इटलीवासियों को विचित्र लगती हैं, वहाँ अक्सर बिल्कुल सहज मानी जाती हैं। या कम से कम, मैं तो यही मानता था।

मैंने इंटरकॉम दबाया। घंटी की भिनभिनाहट के बजाय मुझे एक घंटा बजता सुनाई दिया, ठीक वैसा ही जैसा चर्चों में यूखारिस्त के समय बजाया जाता है।

एक नाटा आदमी सामने आया। गंजा। काली दाढ़ी वाला। एक भिक्षु का चोगा पहने।

मैंने बताया कि मैंने आरक्षण करा लिया है और ऑनलाइन भुगतान भी कर चुका हूँ। उसने मेरा पहचान-पत्र लिया, ब्योरे जाँचे, मुझे तीन नंबर लॉकर की चाबी थमाई, वाई-फ़ाई का पासवर्ड लिखा हुआ एक पर्चा दिया, और फिर मुझे साझा कमरे की ओर ले चला।

चलते हुए उसने पूछा कि मुझे पेरिस किस काम से लाया। मैंने जवाब दिया: "औरतें।"

जैसे ही मैंने यह कहा, मुझे तुरंत लगा कि कुछ है जो मेरी समझ से परे फिसला जा रहा है। पर क्या?

वह मेरे आगे-आगे चलता रहा। कुछ ही पल बाद उसने एक बड़ा दरवाज़ा खोला और मुझे भीतर आने का न्योता दिया।

मैं एक ऐसी जगह में दाखिल हुआ जो किसी गोदाम जैसी लगती थी, जिसमें साठ बंक बेड थे और सिर्फ़ दो शौचालय। औरतें दाईं ओर। मर्द बाईं ओर।

1984 में अपनी इतालवी फ़ौजी सेवा के दौरान भी मैंने इससे दूर-दूर तक मिलती-जुलती कोई चीज़ नहीं देखी थी। सबसे बड़ी बैरक जो मैंने कभी देखी थी, उसमें बीस लोग रहते थे।

पर यहाँ, दो हज़ार साल पहले का मेरा सहकर्मी मुझे एक और संदेश भेजने पर आमादा लगता था: "फ्रेगा, तुमने अभी कुछ भी नहीं देखा।"

मैं हर देश और हर परंपरा के लोगों के एक बाज़ार के भीतर खुद को पाता था। वह कोई साझा कमरा नहीं था। वह कोई हॉस्टल नहीं था। वह कुछ बिल्कुल अलग ही था।

इटली में ऐसी जगह सार्वजनिक आक्रोश भड़का देती, न्यायिक जाँचें शुरू करा देती और खबरों में छाई रहती। यहाँ? बिल्कुल सामान्य। फ्रांस में आपका स्वागत है।

फिर भी यह संस्था स्वभाव से कैथोलिक थी, और मैं समझना चाहता था कि ऐसी चीज़ भला कैसे मौजूद हो सकती है।

आखिरकार मुझे पता चला कि यह एक धार्मिक मंडली की थी, जिसका नेतृत्व एक कैथोलिक धर्मादेश करता था, जिसके कार्डिनल को वैटिकन ने कभी बहिष्कृत कर दिया था, क्योंकि उसने खुद को स्थापित ढाँचे में ढालने से इनकार कर दिया था।

तो उसने अपनी एक अलग व्यवस्था खड़ी कर ली थी।

अपना फोन वाई-फ़ाई नेटवर्क से जोड़ने के बाद शनेल का एक संदेश आया। उसने पूछा कि क्या मैं ठीक-ठाक पहुँच गया, मैं किस होटल में ठहरा हूँ, और बताया कि अगर मैं उसे पता दे दूँ तो वह अगली सुबह हमारी मुलाक़ात के लिए खुद मुझे लेने आ जाएगी।

मैंने जवाब दिया कि मैं कुछ ही देर पहले पहुँचा हूँ। यात्रा बहुत बढ़िया रही। और जहाँ तक होटल की बात है, उसने कृपापूर्वक एक कार और ड्राइवर का इंतज़ाम कर दिया है, इसलिए अगली सुबह मेरे पास सवारी पहले से ही होगी। फिर भी, मैंने उसके प्रस्ताव के लिए उसका शुक्रिया अदा किया।

उस शाम, साझा हॉल के भीतर, कुछ अप्रत्याशित घटा। भारतीय मूल के लोगों का एक समूह और ब्राज़ील का एक दूसरा समूह, दोनों एक ही समय पर एक ही संगीत सुन रहे थे। जितना मैं सुनता, वह उतना ही जाना-पहचाना लगता। फिर मुझे समझ आया क्यों। वे gillettenarrative.com पर थे।

यही था जो दो हज़ार साल पहले का मेरा सहकर्मी मुझे दिखाना चाहता था। और इसने मुझे खुश कर दिया।

अगली सुबह, अपने तीन किलोमीटर पैदल चलने के बाद, मैंने शॉम्प-एलीज़े की ओर जाती मेट्रो पकड़ी और तय समय से काफ़ी पहले पहुँच गया।

मैं प्रवेश-द्वार के बाहर रुक गया। एक पल के लिए मैं सोचने लगा कि क्या मैं सही काम कर रहा हूँ।

जवाब था हाँ। क्योंकि मैं किसी से पैसे नहीं माँग रहा था। और मैं दुनिया को सुनने के लिए आज़ाद था।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।